डॉ. उपासना दीक्षित

काली तितलियां

इधर पुरजोर दिख रही हैं काली तितलियां
चहुंओर मंडराती
जब वह मंडराती मेरे कंधे को छूकर गई
तब अनुभव किया
अनेकों प्रश्नों का अंधेरा

रंग-बिरंगी ,आकर्षक तितलियां
डूब गईं विरोध के काले रंग में
रही जब-तक गुलाबी
बहुत सताया गया
करके अपवित्र
पंखों से रंग छुड़ाया गया

ना फूल बचे, ना बगीचे
पहाड़ों के सौंदर्य
मैदानों ने रौंदें
उसकी उड़ान को दे दी
खाली पड़े मकानों- सी बेरंग जिंदगी
उदास -सी सुबह
धुंधली -सी रोशनी

बदलते मौसमों में
अब सीख चुकीं वे
विरोध के पैंतरे
काली पट्टी बांध कर नहीं
काले रंग में रंगकर
इतराना और इठलाना छोड़
अपने बदलते ढंग से
दे रहीं एक संदेश
कि
उड़कर निकलूं जब पास से
तुम्हारे माथे पर बल पड़ जाएं
और तुम जान पाओ
शायद यह सत्य कि
रंग-बिरंगा सौंदर्य
जिस दिन ओढ़ने लगेगी कालिमा
कहां टिक पाओगे
यह सौंदर्य बोध , उनकी कमजोरी नहीं

कारण है
तुम्हारी मुस्कान का
इसे जीवित रहने दो
गुलाबी मृदुलता में स्याह कठोरता
मत घुलने दो।।
तितलियों को चमचमाते देखने के लिए
रंगों की दुनिया बसने दो।।